The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 3 | March 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

चुनावी नारे - 18 वीं लोकसभा के संदर्भ में एक विश्लेषण

लेखराज वर्मा
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, ब्यावर,राजस्थान 305901
ईमेल - lekhrajverma0@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

रचनात्मक नारे, गारण्टी, खटाखट, फटाफट, सटासट, संविधान बचाओं

ABSTRACT

भारतीय राजनीति में चुनावी कार्यक्रम उत्सव के रूप में सामने आता है। पूरे भारतवर्ष में यह कई चरणों में आयोजित किया जाता है। लोकसभा व विधानसभाओं के चुनाव की घोषणा जब चुनाव आयोग के द्वारा की जाती है तभी से युवाओं में जोश भर जाता है वे बहस परिचर्चा, प्रचार, रैली, सभाओं के माध्यम से इसका हिस्सा बनते है। राजनीतिक दल भी अपनी कार्ययोजना व विचारधारा को संगीत, सभा, रैली व नारों के माध्यम से अभिव्यक्त करते है। नारो का प्रभाव लोकसभा चुनाओं में प्रारम्भ से ही रहा है। इस 18वीं लोकसभा में भी ऐसे ही नारे सामने आये जिन्होने चुनाव को रोमांचक बना दिया व जनता को राजनीतिक दलो को समझाने में सहायता दी इसी का एक विश्लेषण इस शोध में किया गया है।

DOI : https://doi.org/

शोध आलेख -

भारतीय चुनावी राजनीति में नारों का विशेष महत्व रहा है नारों के माध्यम से राजनीतिक दलयह प्रयास करता है कि वह अपने प्रभाव व वैचारिकता को सरलता से जनता के मध्म में पहुचां कर वोट बैंक को संग्रहित कर सकेंा चुनावी नारों ने सरकारों के निर्माण व पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बीबीसी न्यूज हिन्दी के विकास पांडे का कहना है कि - राजनीतिक दलों ने रचनात्मक नारों के आधार पर चुनाव जीते है जबकि नारों से लोग प्रभावित न कर पाने की सूरत में कई दल हार गये है ।[i]

चुनावी नारे स्थानीय, क्षैत्रीय, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अलग अलग हो सकते है लेकिन इनमे से कुछ विशेष प्रसिद्व होकर उस चुनाव में प्रत्येक मतदाता के जेहन में बस जाते है। नारे सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष भी प्रकट कर देते है भारत में राजनीतिक दलों के नारे अक्सर देश का मिजाज भांपने की दल की क्षमता को रेखांकित करते है, एक अच्छा नारा धर्म, क्षैत्र, जाति और भाषा के आधार पर बंटे हुए लोगो को साथ ला सकता है लेकिन खराब नारा राजनीतिक महत्वकांक्षा को पलीता लगा सकता है।[ii]

भारत राजनीति के चुनाव में नारों के बारे में ऐतिहासिक अवलोकन से यह सपष्ट होता है कि प्रत्येक चुनाव में नारो ने सकारात्मक व नकारात्मक रूप प्रस्तुत कर देश का तात्कालिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। पिछले लोकसभा चुनावों में प्रभावी रहे नारें इस प्रकार से थे ।

1952 के प्रथम लोकसभा चुनाव में जो नारे सामने आये उनमें - **खरो रूपयों चांदी को, राज महात्मा गांधी को** कांग्रेस का यह नारा महात्मा गांधी के संघर्ष व विचारों के समर्थन के रूप में दिया गया था । वही कम्युनिस्ट नेताओं ने यह नारा दिया कि **देश की जनता भूखी है, यह आजादी झूठी है ।** 1957 के चुनाव का नारा रहा **जली झाौंपडी भागे बैल, यह देखो दीपक का खेल** इस पर कांग्रेस ने प्रतिक्रिया स्वरूप नारा दिया **इस दीपक में तेल नहीं, सरकार बनाना खेल नहीं ।** 1977 में नारों की जंग तेज थी व हर वार नारों के द्वारा किया जा रहा था, जो इस प्रकार रहा - इंदिरा गांधी की कांग्रेस पर निम्न रूप में नारे सामने आये **नसबंदी के तीन दलाल इंदिरा, संजय, बंशीलाल । जमीन गई चकबंदी में, मकान गया हदबंदी में, द्वार खडी औरत चिल्लाये, मेरा मरद गया नसबंदी में । आकाश से नेहरू करे पुकार मत कर बेटी पर अत्याचार ।** कांग्रेस का नारा आया **इंदिरा इज इंडिया ऐण्ड इंडिया इज इंदिरा ।** 1980 में जनता शासन के पश्चात वापस इंदिरा आई उस समय नारा रहा **इंदिरा जी की बात पर, मुहर लगेगी हाथ पर** जो खूब प्रसिद्व रहा । 1984 के आम चुनाव जो इंदिरा गांधी की मृत्यू के पश्चात हुए उसमें सहानुभूति की लहर थी और नारा सामने आया **जब तक सूरज चांद रहेगा, इंदिरा तेरा नाम रहेगा ।** 1991 में राजीव गांधी की मृत्यू के बाद जो चुनाव हुआ उसमें सहानुभूतिरूप में नारा रहा **राजीव तेरा बलिदान, याद करेगा हिन्दुस्तान ।** 1993 के चुनाव में भाजपा के नारे **श्रीराम** के खिलाफ मुलायम व कांशीराम का नारा रहा **मिले मुलायम कांशीराम, हवा हो गये श्रीराम ।** 1996 में भाजपा ने जो नारा दिया वह था - **सबको देखा बारी - बारी अबकी बार अटल बिहारी ।** बसपा ने नारा दिया **चढ गुडन की छाती पर मुहर लगेगी हाथी पर ।** 2004 में भाजपा का साइनिंग इंडिया व भारत उदय नारा फेल हो गया व कांग्रेस का नारा **कांग्रेस के हाथ, आम आदमी के साथ** जीत गया । 2009 का लोकसभा चुनाव मुख्यत: क्षैत्रीय दलों के नारे प्रसिद्व रहे जिसमें टीएमसी का नारा मां, माटी, मानुष व बसपा का नारा **बेटियों को मुस्कराने दो बहनजी को आने दो** मुख्य थे । 2014 में कांग्रेस **कटटर सोच नहीं युवा जोश** के साथ मैदान में रही व हार गई वहीं बीजेपी ने **अबकी बार मोदी सरकार, सबका साथ सबका**

विकास, अच्छे दिन आने वाले है, हर - हर मोदी घर - घर मोदी सफलता दिलाई । 2019 कांगेस ने नारा दिया **मोदी हटाओं देश बचाओं, अब होगा न्याय** के साथ असफल रही वहीं बीजेपी मोदी है तो मुमकिन है व अबकी बार फिर मोदी सरकार सफल नारा रहा ।[iii]

18 वीं लोकसभा के आम चुनाव में सभी राजनीतिक दलो ने नारों के रूप में अपनी पार्टी का प्रचार प्रसार शुरू किया लेकिन आमजन की जुबान पर कुछ नारे प्रसिद्व रहे लेकिन अधिक सफल नहीं हो पाये इस चुनाव के प्रमुख नारे निम्न थे ।

अबकी बार 400 पार, मोदी की गारण्टी, जो राम को लाये है हम उनको लायेगे, हाथ बदलेगा हालात, खटाखट,खटाखट,खटाखट, फटाफट, फटाफट, फटाफट, संविधान बचाओं, मां माटी मानुष आदि ।

अबकी बार 400 पार - पीएम नरेन्द्र मोदी ने संसद में राष्टपति के अभिभाषण पर बोलते हुए लोकसभा चुनाव का एजेण्डा सेट कर दिया। 2024 में बीजेपी सरकार बनने का विश्वास दिलाया और कहां कि मुझे विश्वास है कि -देश बीजेपी को 370 सीटे अवश्य देगा और एनडीए का आंकडा 400 के पार रहेगा । अगला कार्यकाल बडे फैसलो के लिए होगा और अगले हजार वर्षो के लिए मतबूत नींव रखने का कार्यकाल होगा देश के 140 करोड देशवासियों के सामर्थ्य पर मुझे अपार भरोसा है।iv बीजेपी के सभी शीर्ष नेता अपने पूर्व के नेताओं की विचारधारा को कठोरता से आगे बढाकर सामान्यजन तक यह विचार प्रसारित करने के लिए प्रयासरत थे। इसके अलावा 17 वीं लोकसभा में प्राप्त बहुमत से आगे निकलना चाहते थे। 18 वीं लोकसभा के चुनाव में भी यह विचार प्रस्फुटित हुआ और पार्टी स्तर पर यह विचार प्रकट हुआ और आमजन तक पहुंचा । लेकिन प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि 17 वीं लोकसभा के हमारे कार्यकाल को देखकर जनता ने हमें यह विचार दिया और आज यह हमारी पार्टी का मुख्य नारा बन गया है । पार्टी के सभी नेता सभाओं में टीवी डिबेट पर कही भी प्रचार पर इसका प्रचार प्रसार करता नजर आया इस चुनाव में यह अधिकतर जनता की आवाज का हिस्सा बना रहा लेकिन सफलता इतनी प्राप्त नहीं कर पाया क्योकि इसी समय विपक्षी गठबंधन इंडिया का नारा संविधान बचाओं भी धीरे धीरे रफ़तार पकडकर लोगो के जैहन में जगह बना रहा था जिसका परिणाम बीजेपी 400 सीटों की जगह 240 सीटे ही प्राप्त करने में सफल रहीं । राजनीतिज्ञ प्रशांत किशोर का इस पर कहना है कि 400 पार के नारे में कोई बुराई नहीं है लेकिन उददेश्य साफ नहीं है जैसे 2014 में साफ था कि बहुत हुई मंहगाई की मार, अबकी बार मोदी सरकार ।[v]

मोदी की गारण्टी - पीएम मोदी ने कहां कि मैने विकसित भारत के निर्माण के लिए चार स्तंभों को मतबूत करने की गारण्टी दी थी - गरीब ,किसान, नौजवान और नारी शक्ति कल जो बजट आया है वो मोदी की ऐसी ही गारंटियों को पूरा करने की गारण्टी है। 13 अप्रेल 2024 को बीजेपी ने अपने घोषणापत्र का नाम भी मोदी की गा ारण्टी ही रखा।[vi] बीजेपी शीर्ष नेतृत्व का मानना था कि पीएम की छवि जनता में खूब है व विदेश नीति व विकास कार्यो की चर्चा है अत इसे असानी से भुनाया जा

सकता है और यह फॉर्मूला काफी सफल भी रहा क्योकि मीडिया,इंटरनेट के माध्यम से मोदी ने अपना एक जगह जनता में बनाली थी ।

जो राम को लाये है हम उनको लायेगे - भजन गाायक कन्हैया मितल ने गाना गाया था [vii]और चुनाव के समय में ही राममंदिर की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम किया गया था गाना अधिकतर भारतीयों की जुबान पर था इसने नारे का रूप भी ले लिया लेकिन मोदी के नेतृत्व में राम मंदिर प्रतिष्ठान कार्यक्रम केवल एक इवनमैनेजमेण्ट प्रोगा्रम नजर आया जिसमें सभी पीआईपी फिल्मी हस्तियां,कॉरपॉरेट जगत,व साधुसंत नजर आये आम जनता केवल इंटरनेट व टीवी के माध्यम से ही जुड पाई व स्वयं अयोध्या की जनता ही शामिल नहीं की गई जिसका परिणाम बीजेपी अयोध्या का चुनाव हारी व यह केवल एक संगीत बन कर रह गया इसका विशेष असर नहीं रहा।

हाथ बदलेगा हालात - कांग्रेस का चुनाव चिन्ह हाथ है उसने इस चुनाव में 5 न्याय व 25 गारण्टी के साथ अभियान चलाया इसमें 5 न्याय युवाओं, नारी, किसान, श्रमिक, हिस्सेदारी के रूप में सामने रखा ।[viii] इस आधार पर कांगेस के लिए चुनाव लडने का संकल्प रखा प्रयास भी हुआ निश्चित ही राहुल गांधी की योजनाये ठीक है लेकिन मीडिया द्वारा जो छवि गढी गई है उस लिहाज से अपने विचारों को प्रभावी बनाने में असफल रहे और इस बार भी इन गारण्टियों का विशेष लाभ नहीं होकर आंशिक लाभ ही हुआ ।

खटाखट,खटाखट,खटाखट - राहुल गांधी ने एक चुनावी रैली में महिलाओं के खाते में 1 लाख डालने के लिए कहां कि हमारी सरकार आती है तो महिलाओं के खाते में खटाखट,खटाखट,खटाखट 1 लाख रूपये तुरन्त डाल दिये जायेगे।[ix] यह नारा इतना पॉपुलर हुआ कि ज्यादातर कांगेसी व बीजेपी के भी नेता भी इस नारे की चर्चा अपनी चुनावी सभा में व्यंग,उपहास व गारण्टी के रूप में प्रयोग होने लगा। यह नारा प्रसिद्व हुआ लेकिन आंशिक सफल रहा लेकिन दूसरी पार्टियों ने अपने यहां अलग 'अलग रूप में इसे शामिल किया समाजवादी पार्टी के नेता ने फटाफट,फटाफट, व गटागट के रूप में प्रयोग किया। उन्होने एक जगह कहां कि - जो लोग देश को बडा बनाने का सपना दिखा रहे थे, उन्होने देश को कर्जे में डुबा दिया जनताइनसे कह रही है कि अब आपको हटा देगें फटाफट,फटाफट, और जो लोग कहते है कि ना पाएंगे न पाने देगें, वे लोग सब डकार गए,गटागट,गटागट।

संविधान बचाओं - इस लोकसभा चुनाव में यह नारा काफी प्रभावी रहा सामान्यत प्रत्येक लोकसभा चुनाव में विपक्षी दलो द्वारा संविधान बचाओं के बारे में कहां जाता हैं। इस बार कांग्रेस, सपा, आरजेडी, आम आदमी पार्टी व अन्य दलों ने भी इस मुद्दे को उठाया और आरक्षण छीनने, अधिकारों में कटौती करने का कहां इसके अलावा बीजेपी के दो नेताओं ने बयान देकर इसको हवा दे दी कि 400 सीटे मिलने पर हम संविधान बदल देगे । हांलांकि बाद में कई स्पष्टीकरण दिये गये पीएम मोदी ने स्वयं कहां कि - कोई माई का लाल संविधान नहीं बदल सकता है लेकिन विपक्ष की हवा इस पर तेज

थी और उसने इसे भुनाया भी व अपने पक्ष में कुछ सीटे ले पाये क्योकि कहीं जगह, या वर्ग पर इसका प्रभाव रहा यह नारा सभी दलों का चुनावी मुद्दा रहा ।[x]

माँ, माटी और मानस - तृणमूल कोग्रेस ने अपने पुराने नारे को ही इस चुनाव में जगह दी और इसी के साथ आगे बढी और संतोषजनक प्रदर्शन कर पाई क्योकि बंगाल ही इस पार्टी का चुनावी केन्द्र रहा हैं ।

18 वीं लोकसभा के आमचुनाव नारों के संदर्भ में विशेष रहे क्योकि प्रत्येक पार्टी को अपनी कार्यशैली व विचारधारा को इसमें शामिल करने का प्रयास किया व कुछ हद तक सफलता प्राप्त हुई इन नारों से कई चीजे उभरकर सामने आई जो इस प्रकार से है -

- चुनाव में नारे पार्टी को जिताने का 100 प्रतिशत नुस्का नहीं है ये पार्टी की कार्यशैली व वैचारिकता को संक्षिप्त में प्रदर्शित करने का माध्यम है।
- चुनावी नारों के द्वारा पार्टी आसानी से अपनी वैचाारिकता को प्रदर्शित कर सकती है व मतदाता भी आसानी से समझ जाते है।
- चुनावी नारे लुभावने प्रतीत होते है जो आसानी से कहां जाये उसके प्रति आर्कषण अधिक दिखता है अत्यधिक लुभावने नारे कई बार चुनाव को एक तरफा मोड देते है।
- चुनावी नारे मनोवैज्ञानिकता का रूप है जिससे मतदाता व पार्टी के सम्बंधों को समझा व विश्लेषित किया जा सकता है।
- चुनावी नारे की भाषा सरल व सहज होने पर वे अधिक प्रभावी होते है तकनीकि भाषा विस्तार नहीं दे पाती है ।

1. निश्चित ही 18 वीं लोकसभा का चुनाव नारों के प्रभाव से सरोकार रखता था सभी नारों ने अपनी अपनी जगह बनाकर रखी व प्रदर्शन किया जिससे चुनाव में रौचकता व पार्टी का संदेश समझने में मतदाता को आसानी रही । भारत में चुनावी कार्यक्रम एक उत्सव के रूप में होता है

सन्दर्भ :

i पाण्डे,विकास, क्या कोई रचनात्मकता नारा चुनाव में जीत दिला सकता है 17 अप्रेल 2014
ii वहीं
iii गुप्ता,संजय,जीत हो हार नारों की रहीं बहार,एनबीटी, 12 अप्रेल 2019
iv अहमद,कुबूल, पीएम मोदी की हुंकार अबकी बार 400 पार,टीवी9, 06 फरवरी 2024
v आज तक, 400 पार का नारा अधूरा, 07 जून 2024, नई दिल्ली
vi एनडीटीवी, मोदी की गारण्टी यानि पूरा होने की गारण्टी है,13 अप्रेल 2024, नई दिल्ली
vii वहीं

viii ईटीवी इण्डिया, कांगेस का हाथ, 4 अप्रेल 2024 नई दिल्ली

ix कृष्णा, वाजपेई, जनसता, राहुल के फटाफट,फटसफट के बाद अखिलेश लाये गटागट,गटागट,17 मई 2024, नई दिल्ली

x श्रीवास्तव,संयम,आज तक, 2024 चुनाव का सबसे बडा मुददा संविधान बचाओं,26 अप्रेल 2024,नई दिल्ली